UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015 (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. – 1-4

"भारत में उच्च शिक्षा का वर्तमान परिदृश्य एवं जीवन मूल्य"

डॉ. राजेश श्रॉफ
प्राचार्य, इन्दौर इंदिरा स्कूल ऑफ कॅरियर स्टडीज

सारांश :–
किसी भी राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में उच्च शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। उच्च शिक्षा आर्थिक एवं सामाजिक विकास की धुरी है। वैश्वीकरण एवं निजीकरण के वर्तमान परिदृश्य में उच्च शिक्षा में रोजगार मूलक पाठ्यक्रमों के साथ–साथ जीवन मूल्यों से संबंधित विषयों का समावेश किया जाना अत्यन्त आवश्यक है। उच्च शिक्षा को आर्थिक उत्पादकता के साथ–साथ जीवन मूल्य से जोड़कर देखा जाना चाहिये। भारत के उच्च शिक्षा क्षेत्र में विगत वर्षों से विदेशी विश्वविद्यालयों एवं संस्थाओं का प्रवेश हुआ है। इन संस्थाओं के साथ–साथ देशी विश्वविद्यालयों एवं संस्थाओं में विदेशी विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि हुई है। इससे जीवन मूल्यों का हस्तान्तरण भी स्वभाविक हुआ है। इस परिप्रेक्ष्य में नैतिक मूल्यों का संरक्षण करना महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। भारत के जीवन मूल्य जैसे ईमानदारी, राष्ट्रभक्ति, माता–पिता एवं शिक्षकों का आदर आदि को पाठ्यक्रमों में जोड़कर राष्ट्र के विकास में उच्च शिक्षा अपना अमूल्य योगदान सुनिश्चित कर सकती है। जीवन मूल्य एवं नैतिक मूल्य से ओतप्रोत उच्च शिक्षित युवा अपने परिवार, समाज एवं राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भुमिका निभा सकता है।

कुंजी शब्द *:– आर्थिक, सामाजिक, परिदृष्य, सर्वांगीण, समावेश।*

प्रस्तावना :–

संपूर्ण विश्व में भारत की पहचान उसके मूल्यों से है, किन्तु युवाओं में नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है। वर्तमान उच्च शिक्षित युवाओं का अनैतिक कार्यों में लिप्त पाए जाना गंभीर चिंता का विषय है। भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली विश्व की तृतीय सबसे बड़ी प्रणाली है। उच्च शिक्षित युवा ही भविष्य में प्रशासनिक, सामाजिक, व्यवसायिक, शैक्षणिक आदि विभागों में कार्यरत होगा, तब उसमें निहित जीवन मूल्य ही समाज के विकास में सहभागी बनेंगे। विश्व स्तर पर उच्च शिक्षा प्रणाली की बढ़ती हुई महत्ता को देखते हुए इसके पाठ्यक्रमों में जीवन मूल्यों एवं उच्च रोजगार परक तत्वों का उचित तालमेल आवश्यक है।

शोधपत्र के उद्देश्य :–

- प्रस्तुत शोधपत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्न है –
- भारत में उच्च शिक्षा के वर्तमान परिदृश्य को समझना।
- उच्च शिक्षा में जीवन मूल्यों के महत्व को जानना।
- उच्च शिक्षा में जीवन मूल्यों को और अधिक सुदृढ़ करने हेतु सुझाव देना।

शोध प्रविधि एवं समंको का संकलन :–

प्रस्तुत शोधपत्र में विभिन्न संदर्भ ग्रंथों, प्रकाशित लेखों, शोधपत्रों, समाचार पत्र–पत्रिकाएँ आदि से एकत्रित जानकारी एवं द्वतीययक समंको का उपयोग किया गया है।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015 (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. – 1-4

साहित्य समीक्षा :–

डॉ. अनुराधा सिंधवानी (फरवरी 2013) के शोधपत्र में स्पष्ट उल्लेखित किया गया है कि, उच्च शिक्षा में जीवन मूल्यों का महत्वपूर्ण स्थान है। बिना जीवन मूल्य के सर्वांगीण विकास असम्भव है। भारतीय युवाओं में गिरते मूल्य (नवम्बर 2013) लेख में श्री हाशमी ने युवाओं में गिरते मूल्यों पर गहरी चिंता व्यक्त की है। वर्तमान में युवाओं के द्वारा नैतिक मूल्यों को नजरअंदाज किया जा रहा है। प्रो. डी.एन. तिवारी (बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय) के लेख 'उच्च शिक्षा में मूल्य' में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में जीवन मूल्यों की समीक्षा की गई है। प्रो. तिवारी के अनुसार उच्च शिक्षित युवाओं में जीवन मूल्य एवं शिक्षा दोनों का समावेश होना चाहिये। प्रो. राम तकवाले, ने अपने वक्तव्य (गोल्डन लेक्चर सिरीज यू.जी.सी.) में वैश्विकरण के चलते भारत की उच्च शिक्षा के सामने चुनौती एवं संभावनाओं का सटिक वर्णन किया है।

भारत में उच्च शिक्षा की नियामक संरचना :–

भारत में उच्च शिक्षा को नियंत्रित एवं निर्देशित करने वाली प्रमुख संस्थाएँ निम्नलिखित है –

1. **मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार** – भारत में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता तथा प्रसार एवं नीतिगत नियमों का बनाने एवं लागु करने की जिम्मेदारी मानव संसाधन विकास मंत्रालय पर है। इन्ही उद्देश्यों की पूर्ति हेतु मानव संसाधन विकास मंत्रालय का गठन 26 सितम्बर 1985 को किया गया।
2. **विश्वविद्यालय अनुदान आयोग** – विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्थापना, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम 1956 के द्वारा की गई है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग भारत में विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों को उच्च शिक्षा के विकास के लिये अनुदान प्रदान करता है। उच्च शिक्षा में गुणवत्ता के मानक तय करने के साथ साथ दिशा निर्देशों का समन्वयन करने का महत्वपूर्ण कार्य विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के पास है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग संपूर्ण राष्ट्र में शोध कार्यों को बढ़ावा देने के लिये अनुदान प्रदान करता है। विभिन्न विश्वविद्यालय एवं उच्च शिक्षा संस्थाओं में नियुक्ति के नियमों का निर्धारण एवं समय–समय पर बदलाव का कार्य भी विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के द्वारा किया जाता है।
3. **राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद्** – राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् एक स्वायत्त संस्था है, जिसकी स्थापना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के द्वारा 1994 में की गई। यह परिषद् विभिन्न विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों एवं उच्च शिक्षा संस्थाओं में उपलब्ध संसाधनों एवं मानको का निरीक्षण कर उन्हें ग्रेड प्रदान करता है।
4. **अखिल भारतीय तकनीकि शिक्षा परिषद्** – अखिल भारतीय तकनिकी शिक्षा परिषद् की स्थापना 1987 में की गई। इसका मुख्य उद्देश्य भारत में तकनिकी शिक्षा का नियंत्रित एवं निर्देशित करना है।

भारत में उच्च शिक्षा की संस्थागत संरचना :–

भारत में उच्च शिक्षा की संस्थागत संरचना निम्न प्रकार से है –

1. **विश्वविद्यालय** – उच्च शिक्षा में विश्वविद्यालय एक प्रमुख संस्थान है, जो यूनिवर्सिटी टीचिंग डिपार्टमेंट के द्वारा तथा विभिन्न महाविद्यालयों को सम्बद्धता प्रदान कर उच्च शिक्षा के विकास में

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015 (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. – 1-4

महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है। वर्तमान में भारत में *737 विश्वविद्यालय कार्यरत है, जिसमें 339 राज्य विश्वविद्यालय, *226 निजी विश्वविद्यालय, *126 डीम्ड विश्वविद्यालय तथा *46 केन्द्रीय विश्वविद्यालय सम्मिलित हैं।

2. **भारतीय प्रबंधन संस्थान** – प्रबन्ध शिक्षा में गुणवत्ता एवं शोध कार्यों को बढ़ाने हेतु तथा विद्यार्थियों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के योग्य बनाने के लिये भारतीय प्रबंधन की स्थापना की गई है। वर्तमान में भारत में *19 भारतीय प्रबंधन संस्थान कार्यरत हैं, जो अमृतसर, रोहतक, सिरमोर, काशीपुर, लखनऊ, गया, शिलोंग, उदयपुर, अहमदाबाद, इन्दौर, रायपुर, रांची, कोलकता, नागपुर, सम्बलपुर, विशाखापट्टनम, बैंगलोर, कोजीकोड तथा त्रिची में स्थापित है।
3. **भारतीय तकनीकि संस्थान** – तकनीकि शिक्षा में गुणवत्ता एवं शोध कार्यों को बढ़ावा देने हेतु 1961 में भारतीय तकनीकि संस्थान की स्थापना की गई। वर्तमान में *16 भारतीय तकनीकि संस्थान कार्यरत है, जो चेन्नई, दिल्ली, गुवाहाटी, कानपुर, खड़गपुर, मुम्बई, राउरकेला, भुवनेश्वर, गाँधीनगर, हैदराबाद, इन्दौर, जोधपुर, मण्डी, पटना, रोपड़ तथा वाराणसी में स्थापित है।
4. उपरोक्त के अलावा विश्वविद्यालय से सम्बद्धता प्राप्त महाविद्यालय तथा स्वायत्त महाविद्यालय उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत है।

** स्त्रोत – वार्षिक रिपोर्ट : मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार।*

भारतीय उच्च शिक्षा एवं जीवन मूल्य :–

वर्तमान उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्विकरण के दौर में जहाँ एक ओर गलाकाट प्रतिस्पर्धा है, वहीं दूसरी और जीवन एवं नैतिक मूल्यों की रक्षा करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों को वर्तमान व्यवसायिक संस्थाओं के लिये उपयुक्त बनाने के साथ–साथ उनके आत्मिक विकास के लिये नैतिक मूल्यों का समावेश अत्यंत आवश्यक है। भारत में नैतिक मूल्यों एवं सामाजिक मूल्यों का गौरवशाली इतिहास रहा है। हमारे यहाँ गुरूकुल शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत धर्मग्रंथों एवं नैतिक मूल्यों पर परिचर्चा आयोजित की जाती थी, जो विद्यार्थियों के नैतिक स्तर को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी। वर्तमान परिदृश्य में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों तथा अन्य उच्च शिक्षा संस्थाओं की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। जिसमें विदेशी विद्यार्थियों की संख्या भी बहुत अधिक मात्रा में है। उच्च रोजगार दिलाने के महत्वपूर्ण उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए जीवन मूल्यों का संरक्षण करना एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी उच्च शिक्षा क्षेत्र की है। जीवन मूल्यों को युवाओं में सुदृढ़ता से स्थापित करने हेतु निम्नलिखित प्रयासों को किया जाना प्रासांगिक है –

- उच्च शिक्षा पाठ्यक्रमों में नैतिक मूल्यों को अन्य विषयों के समकक्ष समानता प्रदान करना।
- धार्मिक एवं अध्यात्मिक परिचर्चाओं को अध्ययन में शामिल करना।
- प्रवेश परीक्षाओं में नैतिक एवं जीवन मूल्यों से सम्बंधित विषयों को समाविष्ट करना।
- उच्च शिक्षा में चयन की योग्यताओं में शैक्षणिक के साथ–साथ नैतिक मूल्यों को भी ध्यान में रखा जाना चाहिये।
- भारत की गौरवशाली परम्पराओं को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिये।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015 (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. – 1-4

- विभिन्न शासकीय एवं निजी विभागों में पदोन्नति के नियमों में नैतिक एवं सामाजिक मूल्य के महत्व को समाविष्ट किया जाना चाहिये।

उपसंहार :–

वर्तमान दौर में उच्च शिक्षित युवाओं को प्रतिस्पर्धा में बनाए रखने हेतु एवं उच्च रोजगार प्राप्ति हेतु उच्च गुणवत्ता एवं प्रयोगिक शिक्षा देना प्रत्येक उच्च शिक्षा संस्थान की जिम्मेदारी है, किन्तु युवाओं को सफल व्यवसाय, डॉक्टर, इंजीनियर, मेनेजर, शिक्षक आदि बनाने के साथ–साथ उनमें नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों को समाविष्ट करने की जिम्मेदारी भी सम्पूर्ण शिक्षा जगत की है। तभी हम राष्ट्र एवं समाज को सर्वांगीण विकास के मार्ग पर सुदृढ़ता से ले जा सकेंगे।

संदर्भ ग्रंथ :–

- वार्षिक रिपोर्ट – मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।
- वर्तमान भारतीय उच्च शिक्षा – दशा एवं दिशा,
  रिसर्च लिंक शोध पत्रिका, मार्च 2015
- वेल्यू इन हायर एज्युकेशन – प्रकाशित लेख
  प्रो. डी.एन. तिवारी, बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय।
- भारत के उच्च शिक्षा में वैश्विकरण की चुनौतियाँ एवं सम्भावना।
  प्रो. राम तकवाले, गोल्डन लेक्चर सीरीज यू.जी.सी.।
- शोधपत्र 'वेल्यू इन हायर एज्युकेशन – नीड एण्ड इम्पोर्टेन्स'
  डॉ. अनुराधा सिंघवानी एवं डॉ. राजीव कुमार, फरवरी 2013।